चाहत

राहुल और वनिता कॉलेज कैंटीन में बैठे थे. उनके सामने टेबल पर सॉफ्ट ड्रिंक की बोतलें पड़ी हुई थी. वनिता, राहुल से बेइंतिहा मोहब्बत करती थी. वो राहुल पर जान देती थी. राहुल भी उसे बहुत प्यार करता था. सेकंड इयर में वो दोनों एक ही क्लास में थे.

राहुल ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया हुआ था, वो उसकी नाजुक उँगलियों को धीरे से दबाने लगा. वनिता ने उसकी तरफ देखा, उसकी आँखों से कामुकता साफ छलक रही थी.

‘राहुल, इससे आगे कब बढेगा तू? मेरे हाथ को तो तू सेकड़ों बार पकड़ चुका है.’

‘आगे बढ़ूँगा, वनिता. तू ज़िन्दगी भर मेरे पास ही तो है, कहाँ जाने वाली है तू?’

‘तेरी बातें भी ना, बस.’

इतने में सुनील आकर उनके सामने बैठ गया, बैठते ही उसने वनिता पर एक उड़ती नजर डाली. पीछे-पीछे तेज कदम उठाते हुए सोनिया, सुनील के पास वाली कुर्सी पर आकर बैठ गई.

‘एक मिनट रुक नहीं सकता था मेरे लिए, इतनी भी क्या जल्दी थी तुझे?’ सोनिया ने गुस्से से सुनील को कहा.

‘अरे, तू सोनिया को अकेला छोड़ कर क्यों आ गया था?’ राहुल ने सोनिया का साथ दिया.

‘तू हमेशा ऐसा ही करता है सोनिया के साथ.’ इस बार वनिता बोल पड़ी.

सोनिया उठ कर राहुल के पास पड़ी कुर्सी पर जाकर बैठ गई. सुनील अकेला पड़ गया.

‘तुम तीनों मिल गए और मुझे अकेला छोड़ दिया, ठीक है, देख लूँगा मैं भी.’ सुनील नाराज़ हो कर बोला.

सोनिया का झुकाव सुनील की तरफ था, वो उसे प्यार करती है. सुनील, वनिता को पसंद करता था. मन ही मन वो उसे प्यार करने लगा था, पर वनिता, राहुल से प्यार करती थी. सुनील को राहुल अच्छा नहीं लगता था. एक बार उसने बातों-बातों में वनिता से अपने दिल की बात कह दी थी, उसी वक़्त वनिता ने स्पष्ट कह दिया था वो राहुल से प्यार करती है. सुन कर सुनील के दिल को धक्का लगा.

^

सोनिया कॉलेज के ग्राउंड में एक पेड़ के नीचे खड़ी सुनील का इंतजार कर रही थी. इतने में तारा उधर से गुजरी.

‘यहाँ अकेली क्यों खड़ी है? चल, चलते हैं, मेरी स्कूटी इधर सामने ही खड़ी है.’ तारा ने कहा.

‘नहीं तारा, तू जा, मुझे काम है.’ सोनिया ने उसे टाल दिया.

तारा समझ गई, वो सुनील का इंतजार कर रही है. उसका जवाब सुनकर तारा चली गई.

सोनिया खड़ी-खड़ी थक गई, सुनील अभी तक नहीं आया. वो मोबाइल भी नहीं उठा रहा था. निराश हो कर सोनिया वहां से चली गई.

इधर, सुनील अपने घर पहुँच चुका था, वो अपने बेडरूम में बैठा वनिता के बारे में सोच रहा था. वो किसी भी कीमत पर उसे पाना चाहता था, मगर कैसे? क्या करे वो? वनिता ने स्पष्ट कह दिया था, वो राहुल से प्यार करती है.

वो सोच-सोच कर पागल हो गया. उसे कुछ तो करना होगा, जिससे वनिता, राहुल से नफरत करने लगे.

अचानक, उसे तारा का ध्यान आया. उसे याद आया, वो राहुल के लिए पागल है. उसने तुरंत मोबाइल उठाया, तारा को फोन मिलाया. उसने तारा को मिलने के लिए कैफ़े में बुलाया. तारा ने आने के लिए ‘हाँ’ बोल दिया.

कैफ़े में सुनील बैठा तारा का इंतजार कर रहा था. सुनील को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा, तारा आ गई. वो आकर सुनील के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई.

‘तू कॉलेज में तो मेरी तरफ देखता भी नहीं, फिर, आज कैसे बुला लिया, अपनी इस दोस्त को?’

‘नहीं तारा, ऐसी बात नहीं है. मुझे मालूम है, तू राहुल को पसंद करती है, बस, इसलिए तुझे एप्रोच नहीं किया, तू मेरी सबसे अच्छी दोस्त है, अच्छा, बता तो, क्या तेरे दिल में अभी तक राहुल के लिए फीलिंग है?’

‘तू लड़का है ना, एक लड़की की फीलिंग कैसे समझेगा? एक लड़की जब किसी को दिल से प्यार करती है, तो उसे दिल में बसा लेती है, राहुल मेरे दिल में बसा हुआ है. मैं राहुल को अभी तक चाहती हूँ, मैं उसे बहुत पसंद करती हूँ. लेकिन...वनिता...वो राहुल को चाहती है ना.’

'लेकिन, राहुल को वनिता में इंटरेस्ट नहीं है, मैं जानता हूँ,'

'अच्छा? क्या बात कर रहा है तू?

'हाँ, और क्या? इसीलिए तो बुलाया है तुझे. मैं तो कहता हूँ तू मायूस मत होना, राहुल से मिलना - जुलना शुरू कर दे. जहाँ जरुरत होगी, मैं तेरी मदद कर दूंगा.'

'तू सच कह रहा है ना, सुनील,'

'हाँ, तारा, मैं सच कह रहा हूँ.'

'पर, मैं करूँ क्या? कैसे शुरुआत करूँ? कई महीनों से मैं राहुल से मिली तक नहीं, तेरे को मुझे रास्ता बताना होगा, बताएगा ना?'

'हाँ, हाँ, सब बताऊँगा, मैं दिल से चाहता हूँ...तेरी और राहुल की जोड़ी जम जाये.'

'लेकिन, वनिता?'

'तू उसकी फ़िक्र मत कर. वो मेरे ऊपर छोड़ दे.'

^

अगले दिन, तबीयत ठीक ना होने की वजह से वनीता कॉलेज नहीं आई. सुनील ने तारा को फोन करके बता दिया, कि अच्छा मौका है, राहुल से अकेले में मिलने का.

राहुल क्लास से निकला तो सामने तारा खड़ी थी. तारा ने मुस्कुराते हुए उसे देखा, राहुल ने मुस्कुरा कर 'हेल्लो' कहा. जवाब में तारा भी 'हेल्लो' कहते हुए राहुल के करीब आ गई. दोनों साथ-साथ चलने लगे, चलते-चलते वो बाहर आ गए.

'अं...अं, तारा, कैंटीन चलें?'

'हाँ, ठीक है, चल.'

दोनों कैंटीन में आ गए. टेबल पर दोनों आमने - सामने बैठ गए.

'क्या लेगी, बोल?'

तारा ने बता दिया, राहुल ने आर्डर कर दिया.

राहुल को अच्छी तरह से पता था, तारा उसे पसंद करती है.

'तू तो आज कल देखता भी नहीं मेरी तरफ.'

'अरे, नहीं, मैं हमेशा देखता हूँ तुझे, पर तू हमेशा सोनिया के साथ होती है, है ना?'

दोनों इसी तरह की बातें करते रहे, सॉफ्ट ड्रिंक के दो राउंड हो गए.

दोनों उठ खड़े हुए, वो कैंटीन से बाहर आ गए.

तारा ने उससे कहा, 'आज मैं अपनी स्कूटी नहीं लाई हूँ, क्या तू मुझे अपनी बाइक पर छोड़ सकता है?

राहुल ने ख़ुशी से 'हाँ' कर दी.

तारा बाइक पर राहुल के पीछे बैठ गई. राहुल ने बाइक दौड़ा दी. आज तारा खुश थी, और राहुल भी.

^

घर पहुँचते ही तारा ने हैंड बैग से मोबाइल निकाल कर हाथ में पकड़ा, वो सुनील का नंबर मिलाने लगी ही थी, इतने में सुनील की ही कॉल आ गई, उसने फोन फ़ौरन उठा लिया.

'हेल्लो, तारा, कैसा रहा?'

'हेल्लो, सुनील, आज का दिन बहुत अच्छा गया, थैंक यू.'

'अब ध्यान से सुन, वनिता को बुखार है, वो और तीन-चार दिन कॉलेज नहीं आने वाली. तेरे पास यह सुनहरी मौका है, इसे हाथ से मत जाने देना, समझ गई?'

'हाँ, हाँ. समझ गई. थैंक्यू, सुनील.'

फिर, सुनील उससे देर तक बात करता रहा.

तारा ने उसे बता दिया, उसकी स्कूटी कहाँ खड़ी है, वो स्कूटी ले आये. वो बहाना बना कर राहुल के साथ उसकी बाइक पर आ गई है.

^

अगले तीन-चार दिन, तारा, राहुल से मिलती रही. वो दिन में कभी कैंटीन में बैठते, कभी कॉमन रूम में, तो कभी कॉलेज के गार्डन में बैठते थे.

दोनों एक दूसरे के करीब आते गए, दोनों एक दूसरे को पसंद तो करते ही थे. अब इन दिनों में मिलने से राहुल, तारा से प्यार करने लगा था. तारा तो उसे पहले से ही प्यार करती थी. इन दिनों उन दोनों के बीच कुछ नाज़ुक पल भी गुज़रे.

^

वनिता कॉलेज आई. उसने हर जगह राहुल को ढूंढा, पर उसे राहुल कहीं नहीं मिला. वो कल से राहुल को फोन कर रही थी, मगर उसका फोन स्विचड ऑफ आ रहा था.

उसने सुनील को फोन मिलाया, सुनील का फोन लग गया. वनिता ने उसे कैंटीन में आने को कहा.

कैंटीन में आकर वो वनिता का सुन्दर चेहरा देखता ही रह गया.

'राहुल कहाँ है? उसका फोन भी नहीं लग रहा है, मैं बहुत परेशान हूँ, जल्दी बता, तुझे पता है राहुल कहाँ है?'

'वो तो आज कल तारा के साथ घूमता रहता है, पता नहीं इस वक़्त कहाँ होगा?'

'क्या? तारा के साथ? सुनील, जल्दी पता लगा, वो इस वक़्त कहाँ होगा?'

'चल, देखते हैं सब जगह पर.'

सुनील उसको पहले कॉमन रूम ले गया, वहां राहुल नहीं था.

'चल, अब गार्डन चलते हैं.'

'क्या? गार्डन? राहुल गार्डन में नहीं हो सकता. मुझे मालूम है, वो तो कभी गार्डन जाता ही नहीं. उसे गार्डन पसंद ही नहीं हैं, कहीं और जाकर देखते हैं.'

सुनील को पक्का पता था, राहुल इस वक़्त गार्डन में ही होगा, तारा के साथ. वो चाहता था कि वनिता, राहुल को तारा के साथ गार्डन में देख ले. सुनील को पता था, तारा और राहुल गार्डन में ही मिलेंगे.

सुनील के कहने से वो उसके साथ गार्डन की ओर चल पड़ी. गार्डन के अन्दर आकर उन्होंने राहुल को ढूंढना शुरू किया.

सुनील की नज़र राहुल पर पड़ी, वो और तारा एक पेड़ नीचे बैठे थे. तारा उसके आलिंगन में थी. वनिता ने भी उनको देख लिया. उनको ऐसे स्थिति में देख कर वनिता के होश उड़ गए. वो तेजी से राहुल के पास जाने लगी, सुनील ने उसको पकड़ कर रोका. उसने वनिता को दबे पाव चलने को कहा, वो उनके पीछे कुछ दूर एक पेड़ की ओट में खड़े हो गए. उन्होंने ज़रा भी आहट नहीं होने दी, वो ध्यान लगा कर राहुल और तारा की बातचीत सुनने लगे.

'राहुल, तू मुझे छेड़ेगा तो नहीं, मैं तुझे दिलोजान से चाहती हूँ. ज़िन्दगी भर मेरा साथ देगा ना? रहेगा ना ज़िन्दगी भर मेरे साथ? नहीं, तो मैं मर जाऊंगी तेरे बिना.'

'ऐसा मत बोल, तारा, मैं ज़िन्दगी भर तेरा साथ निभाऊंगा, तू मेरे दिल की गहराई तक बस चुकी है.'

'पर, वनिता?'

'मुझे पता है वनिता मुझे चाहती है, पर मैं उससे प्यार नहीं करता. मैं सब बता दूंगा उसे. मैं बोल दूंगा उसे, मैं तारा से मोहब्बत करता हूँ, पूरी ज़िन्दगी उसी के साथ बिताऊँगा.'

उसने तारा को एक लम्बा किस किया और कस कर अपने सीने से लगा लिया. तारा उसकी आगोश में सिमट गई.

उनकी बातें सुन कर वनिता का दिल बैठने लगा, उसने अपना सिर सुनील के कंधे पर रख दिया. सुनील ने अपने हाथ से वनिता की पीठ थपथपाई, उसने सिर उठा कर सुनील को देखा.

'सुनील, अब क्या होगा?'

'चल कर राहुल से बात करनी चाहिए.'

'नहीं, बिल्कुल नहीं, मैं अब उस धोखेबाज़ की शकल भी नहीं देखूंगी, वो मेरा साथ छोड़ चुका है, सुना ना तूने भी, मैं अब क्या करूंगी? कहाँ जाऊंगी?'

'वनिता, दिल छोटा मत कर, मैं तुझे बहुत प्यार करता हूँ, मैं ज़िन्दगी भर तेरा साथ निभाऊंगा, अगर, तू मुझ पर भरोसा करे तो.'

'मुझे पता है, तू मुझे प्यार करता है, मुझे याद है तूने एक बार अपने प्यार का इज़हार किया था मुझसे, और मुझे ये भी याद है मैंने मना कर दिया था.'

'लेकिन, वनिता, मैं आजतक तेरे से मोहब्बत करता हूँ, तू नहीं मिलेगी तो मैं मर जाऊँगा.'

'इतना प्यार करता है मुझसे?'

'हाँ.'

सुनील ने उसको अपने सीने से लगा लिया.

'तो फिर सोनिया?'

‘मैं तो सिर्फ तेरे से प्यार करता हूँ, बस, और किसीसे नहीं, बता, वनिता, मेरा प्यार कबूल करेगी?’

‘हाँ, सुनील, मुझे तेरा प्यार कबूल है, तू वादा कर कभी मेरा साथ तो नहीं छोड़ेगा?’

कह कर वनिता उसके और नजदीक हो गई.

‘मरते दम तक नहीं, वनिता, मरते दम तक नहीं.’

सुनील ने उसे कस कर अपने आलिंगन में ले लिया. सुनील की आँखों में संतोष और आनंद के मिलेजुले भाव थे. उसने अपनी आँखें बंद कर ली.

आज उसकी चाहत जीत गई .

सुनील, वनिता को अपने शरीर का सहारा देता हुआ, गार्डन के बाहर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा.

*****